ISSN: 2582-7162
Review Article

टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

श्रीराम पारीक

सहायक आचार्य, एस.एस.जी. पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर

Corresponding Author:
श्रीराम पारीक
सहायक आचार्य, एस.एस.जी. पारीक स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, जयपुर
Mail id : shrirampareek07@gmail.com

Received 2022 April 10, Accepted 2022 April 26, Published - 2022 May 07

सारांशः–
वर्तमान समय में टीवी पर प्रसारित विभिन्न कार्यक्रमों का प्रभाव विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार के मनोविकारो को जन्म दे रहा है। इन कार्यक्रमों से न केवल मानसिक अपितु व्यावहारिक परिवर्तन भी देखें जा सकते है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर टीवी कार्यक्रमों का उनके मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है, जिसमें उनके नैतिक, सामाजिक व धार्मिक मूल्यों की पहचान कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये है।

संकेताक्षरः–
मूल्य, समाज, पारिवारिक वातावरण, व्यवहार, मानसिकता।

प्रस्तावनाः–

व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। प्रत्येक व्यक्ति में अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छायें होती है, जिन्हें व्यक्ति समाज में रहकर पूर्ण करता हैं सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से एवं व्यवस्थित चलाने के लिए हमे उच्चस्तरीय मापदण्डों की आवश्यकता होती है, जो इन माापदण्डो पर खरे उतरते है उन्हे मूल्य कहा जाता है।

''मूल्य सामाजिक रूप से स्वीकृत इच्छाएं है''

–प्रो. राधाकमल मुखर्जी

मूल्य आकांक्षा से जुडे होते है। समाज की जैसी आंकाक्षाये हाती है मनुष्य उसी दिशा में कार्य करने लगता है। ये आंकाक्षायें ही मूल्य रूप में अभिव्यक्त होती है।

मूल्य वे है जो मानव को नैतिक व अनैतिक का पाठ पढ़ाते है तथा उसे सत्य मार्ग पर चलने को प्रेरित करते है।

मूल्यों को निम्नांकित शीर्षकों के अन्तर्गत विभक्त किया जा सकता हैः–

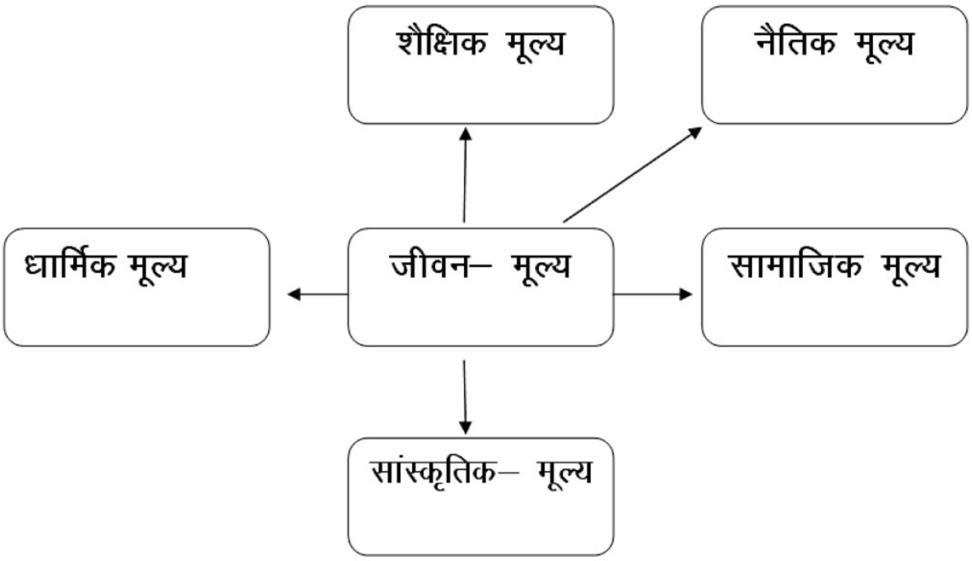

::समस्या का औचित्य::-

प्रत्येक अनुसंधान कार्य के करने से पूर्व एक समस्या का चयन आवश्यक है वो समस्या किसी व्यक्ति या समूह है संबंधित होती है। जिस समस्या को अनुसंधानकर्ता चुनता है, वह शैक्षिक, सामाजिक जागरूकता व वर्तमान समस्या पर आधारित होनी चाहिये।

आज के समय में एकल परिवार, कामकाजी माता–पिता व अन्य कारणों से बच्चे टी.वी. से अधिक जुड रहे है, जिसका प्रभाव उनके आदर्शो, मूल्यों, व्यवहारो, आचार–विचार आदि पर पड रहा है। बालक टी.वी. पर प्रसारित कार्यक्रम के अच्छे व बुरे दोनों प्रभावों को आत्मसात् कर लेते है, जैसे किसी डरावने कार्यक्रम में दिखा ये जाने वाले तंत्र–मंत्र के दृश्य छोटे बालकों में अंध विश्वास की प्रवृति को बढावा देते है। इसके अलावा, विभिन्न प्रकार के टी.वी. एड इस तरह के होते है जो विद्यार्थियों को दिशाभ्रमित कर रहे है।

::समस्या कथन::

''टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के मूल्यों पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन''।

तकनीकी शब्द

- टेलीविजन
- मूल्य

शोध के उद्देश्यः-

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों पर टेलीविजन के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर नैतिकता से जुडे कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाः-

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विधालय के विद्यार्थियों के मूल्यो पर टेलिविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमो के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियो के नैतिक मूल्यो पर नैतिकता से जुडे टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव से सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकनः-

- प्रस्तुत अध्ययन कार्य में जयपुर शहर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के 50–50 विद्यार्थियो को शामिल किया गया है।
- शोध के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो को ही शामिल किया गया है।
- शोध में नैतिक, सामाजिक व धार्मिक मूल्यो को ही शामिल किया गया है।

शोध विधिः-

1. सर्वेक्षण विधिः– शोधार्थी के द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया ।

चर

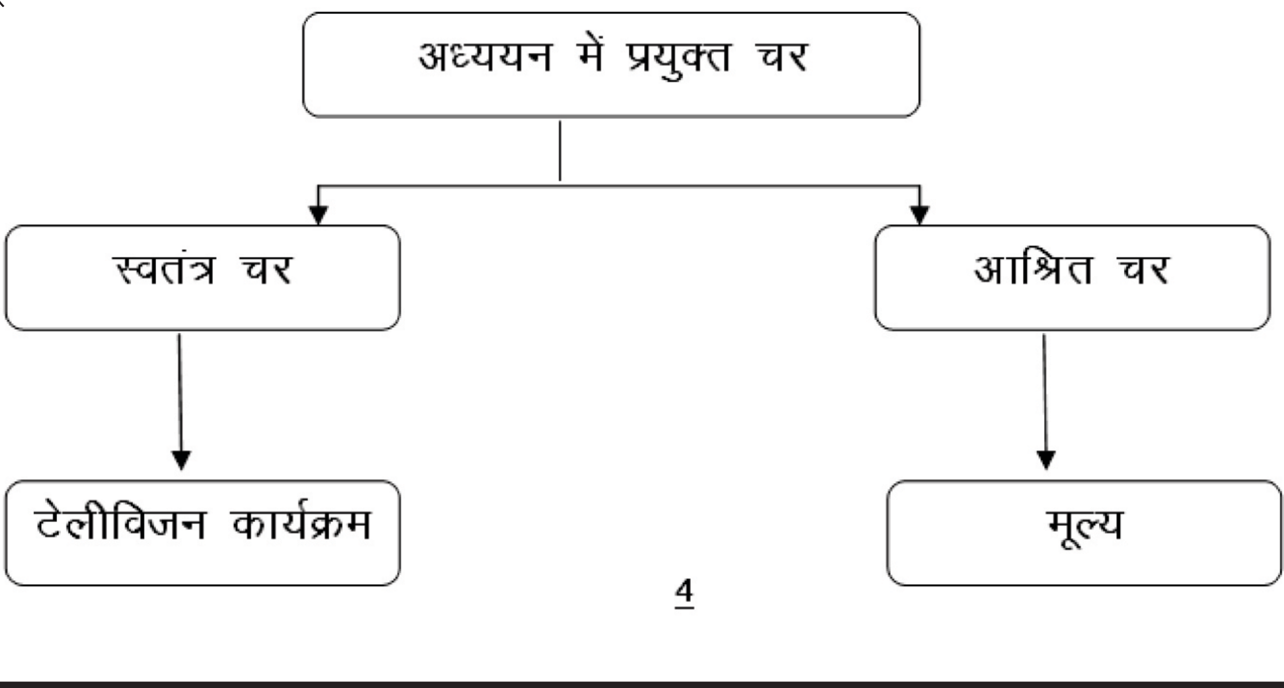

4

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/3.2.2022.412-417

न्यादर्शः–

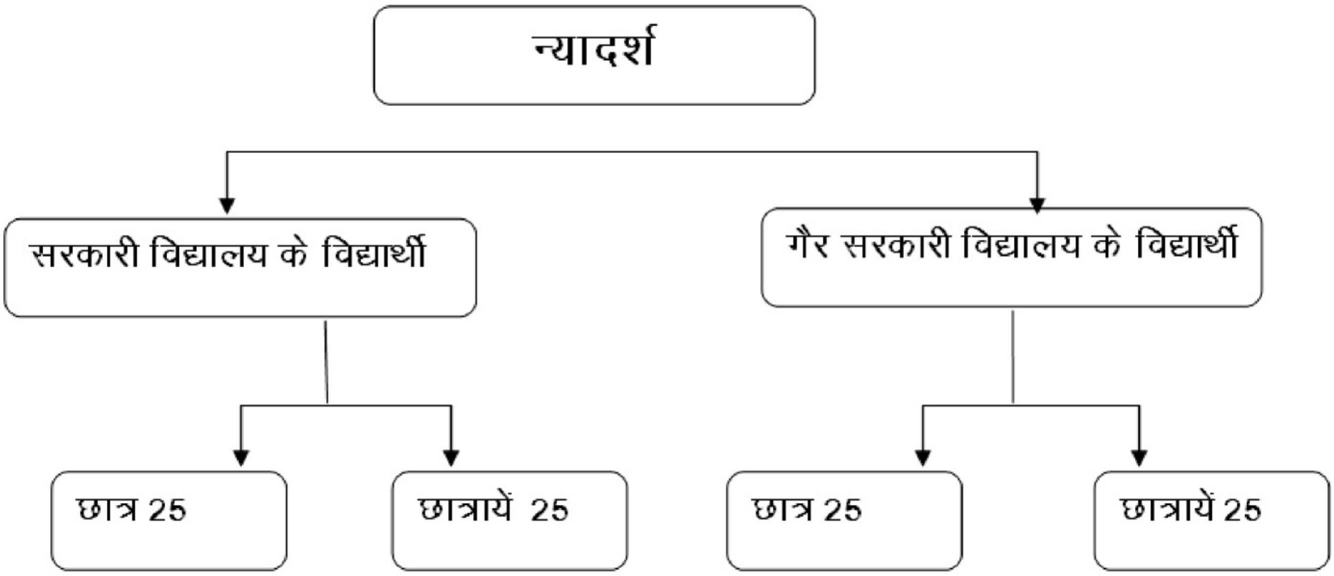

उपकरणः– शोधार्थी के द्वारा अभिवृत्ति मापन प्रभावशीलता स्वं निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

सांख्यिकीः–

- मध्यमान
- प्रमाणिक विचलन
- टी–परीक्षण

परिकल्पनाः–

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यो पर टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी 1

क्र.सं.	विद्यालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	परिणाम
1	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	50	88.96	11.72	1.54	स्वीकृत
2	निजी विद्यालय के विद्यार्थी	50	92.14	8.7		

5

$df = N_1 + N_2 - 2$ $df = 50+50-2$

$df = 98$ 0.05 स्तर पर ही 'T' का अपेक्षित मूल्य

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/3.2.2022.412-417

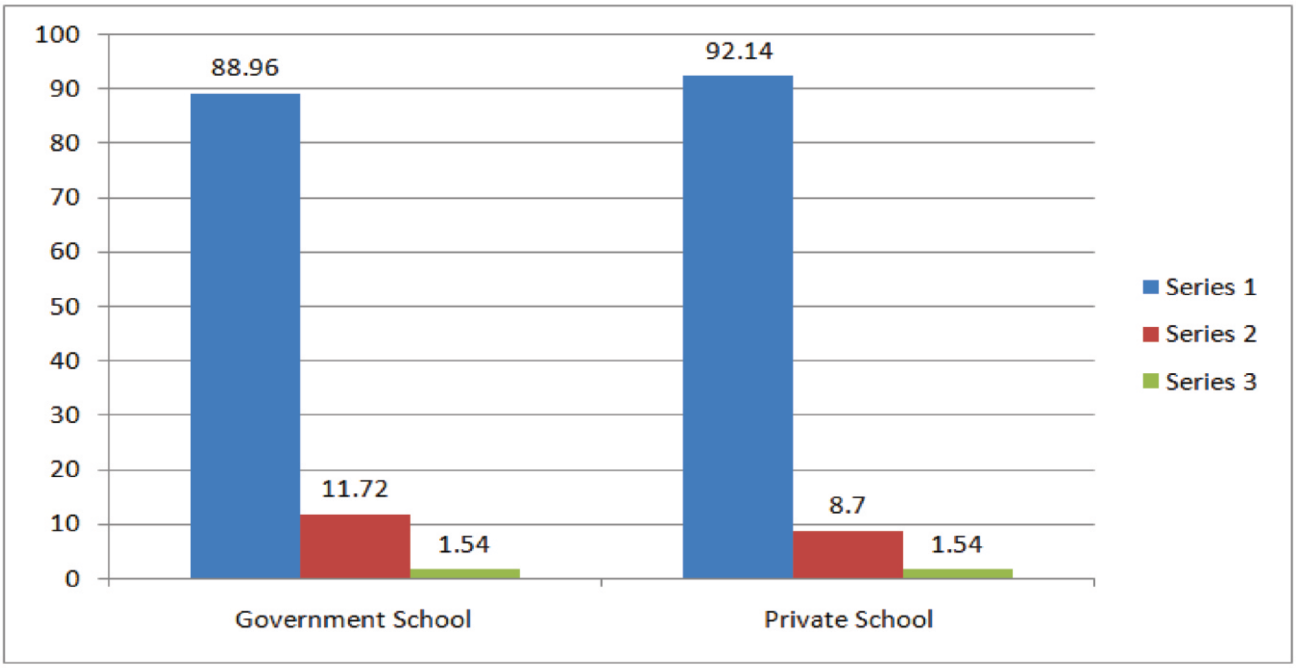

व्याख्या विश्लेषण :-

उपरोक्त तालिका संख्या 1 में माध्यमिक स्तर पर रा.उ.मा. विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियो के मूल्यो को प्रदर्शित करती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि df= 98 का टी प्राप्त मूल्य 1.54 है जो टी तालिका मूल्य से कम है। अतः निराकरणीय परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के मूल्यो पर टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव का सार्थक अंतर नहीं है। स्वीकृति की जाती है। माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियो के टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों से मूल्य पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया।, जिसमें सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यो में सार्थक अंतर नहीं पाया गया तो हो सकता है कि माध्यमिक स्तर के बालक बालिकाओं उत्तर बाल्यावस्था अथवा पूर्व किशोरवस्था के हो सकते है। टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमो में से ये विद्यार्थी अपने पसंदीदा चुनिन्दा कार्यक्रमो को ही देखते है। समाज आयु वर्ग होने के कारण सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थी टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों को समान रूप से सीखते है।

परिकल्पना 2:-

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियो के नैतिक मूल्यो पर नैतिकता से जुडे टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव से सार्थक अंतर नहीं है।

क्र.सं.	विद्यालय	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	परिणाम
1	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	50	32.8	5.33	21.2	अस्वीकृत
2	निजी विद्यालय के विद्यार्थी	50	34.8	4.18	21.2	अस्वीकृत

$df = N_1 + N_2 - 2$ $\quad$ $df = 50+50-2$

$df = 98$ $\quad$ 0.05 स्तर पर ही 'T' का अपेक्षित मूल्य

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/3.2.2022.412-417

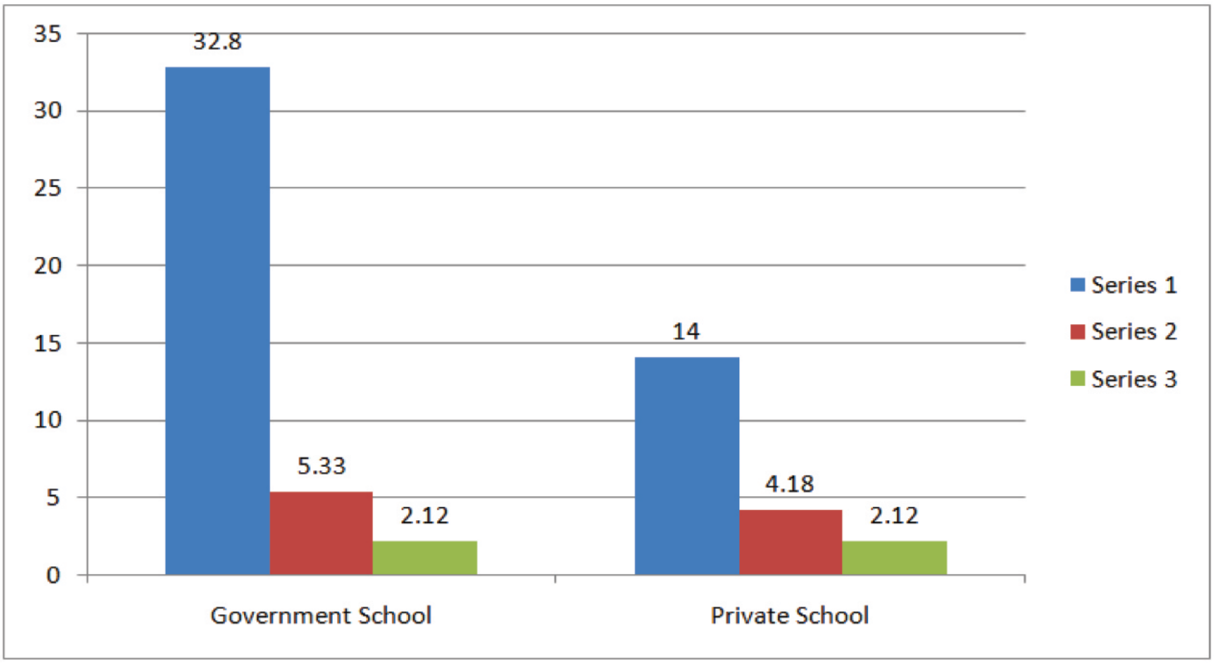

व्याख्या विश्लेषण:-

उपरोक्त तालिका संख्या 2 माध्यमिक स्तर पर रा.उ.मा. विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियो के मूल्यो को प्रदर्शित करती है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि df=98 का 'टी' का प्राप्त मूल्य 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.98 हैं। गणना करने पर 'टी' का प्राप्त मूल्य 2.12 है जो कि 'टी' तालिका मूल्य से अधिक हैं अतः निराकरणीय परिकल्पना माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के नैतिक मूल्यों पर नैतिकता से जुडे कार्यक्रमो की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर है अस्वीकृत की जाती है।

माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यो पर टेलीविजन कार्यक्रमों में (नैतिकता से जुडे) प्रभावशीलता में अंतर होता है। शायद इसका कारण यह हो सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियो में नैतिक मूल्यो में सार्थक अंतर पाया जाता है। ये विद्यार्थी टेलीविजन पर जिस तरह के कार्यक्रम देखते है उन कार्यक्रमों के चुनाव में उनके पारिवारिक वातावरण का भी प्रभाव पडता है सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी अधिकांशतः गरीब समुदाय वर्ग के होते है हो सकता है इसका प्रभाव उनके द्वारा देखे जाने वाले कार्यक्रमों के चुनाव एवं उनके प्रभावों पर पडता है।

परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष:-

- **परिकल्पना 1:-** माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यो पर टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के प्रभाव मे सार्थक अंतर नहीं है।

  निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियो के टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमो से मूल्य पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया। जिसमें सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियो के मूल्यो में सार्थक अंतर नहीं पाया गया हो सकता है कि माध्यमिक स्तर के बालक बालिकाओं उत्तर बाल्यावस्था अथवा पूर्व किशोरवस्था के हो सकते है। इन बालको का अधिकांश समय अध्ययन कार्यो में व्यतीत होता है।

  समान आयु वर्ग होने के कारण सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियो को सीखने की क्षमता समान होती है।

- **परिकल्पना 2:-** माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियो के नैतिक मूल्य पर नैतिकता से जुडे टेलीविजन कार्यक्रमों के प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं है।

  निष्कर्ष के रूप में कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी विद्यालय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियो के नैतिक मूल्यो पर टेलीविजन कार्यक्रम (नैतिकता से जुडे) की प्रभावशीलता में अंतर होता है। शायद इसका कारण यह हो सकता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियो में नैतिक मूल्यो में सार्थक अंतर पाया जाता है। ये विद्यार्थी टेलीविजन पर जिस तरह के कार्यक्रम देखते है, उन कार्यक्रमों के चुनाव में उनके पारिवारिक वातावरण का भी प्रभाव पडता है। सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी अधिकांशतः गरीब समुदाय वर्ग के होते है हो सकता है, इसका प्रभाव उनके द्वारा देखे जाने वाले कार्यक्रमों के चुनाव एवं उनके प्रभावों पर पडता है।

शैक्षिक निहितार्थः-

टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले विभिन्न ज्ञानवर्धक कार्यक्रमो से विद्यार्थियों में अधिगम होता है। विद्यार्थी विभिन्न चैनलों पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों से संबंधित विषय के अध्याय को सीखकर अपनी जानकारी बढ़ा सकते है। टेलीविजन पर विभिन्न विषय विशेषज्ञ किसी पाठ को तकनीकी की सहायता से सीखा सकते है। इस प्रकार टेलीविजन से विद्यार्थी अपनी सीखने की क्षमता को बढ़ा सकते है। इस प्रकार टीवी पर प्रसारित कार्यक्रम विद्यार्थियों की सकारात्मक माहौल में सीखने की गति को बढ़ा सकते है।

संदर्भ सूचीः-

- आत्रेय एस.पी (1974) ''मनोविज्ञान में सांख्यिकी''
- अग्रवाल मीनू (2001) ''मूल्य शिक्षण आगरा''
- भटनागर सुरेश (2007) ''शिक्षा मनोविज्ञान''
- भार्गव महेश (2005) ''आधुनिक मनोविज्ञान परिक्षण व मापन ''
- पाठक पी.डी. ''शिक्षा मनोविज्ञान''
- शर्मा आर.ए (2014) ''शिक्षा मनोविज्ञान के मूल तत्व अग्रवाल पब्लिकेशन''
- सिंह डॉ. विजेन्द्र (2005) ''उदीयमान भारतीय समाज एवं शिक्षा'' अरिहन्त शिक्षा प्रकाशन– जयपुर